फारसी फरमानों के प्रकाश में मुग़लकालीन भारत एवं राजपूत शासक

भाग-3

सम्पादक
डॉ. महेन्द्र खड़गावत

अनुवादक
डॉ. शुजाउद्दीन खां

निदेशालय, राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर

नवीन नं. 254/पूर्व नं. 165

मुहरः– मुहम्मद अकबर सानी बिन अबुल मुज़फ़्फ़र मुहिय्युद्दीन मुहम्मद औरंगज़ेब आलमगीर बादशाह ग़ाज़ी

''अल्लाहुअकबर''

ज़ुब्दतुल अमासिल वलअक़रान, उम्दतुल अशबाह वल आ'यान, शहामत व बसालत आसार, तहव्वुर व शुजाअत दस्तगाह, कुदवए मुअतक़िदाने सलाह अन्देश, सरआमदे इख़लास मनिशाने वफ़ाकेश, शाइस्तए इनायाते फ़रावान राजा रामसिंह। बइनायते बेग़ायते शाहनशाही मुसतज़हर व मुसतबशर बूदह मा'लूम नुमायद अज़ आं जा केह ए'तक़ाद व बन्दगी आं लाइकुल एहसान अज़ क़दीमुल अय्याम इरसन ब इरस बनिसबत ब ईं दूदमान मजद व उ'ला बतक़दीम रसीदह दर पेशगाहे अक़दस नीज़ इख़लासे समीमी आं जलादत निशान बदस्तूर आबा व अजदादे ऊ मुनक़्क़श व हवेदास्त। दीगर आं केह सुलूके आलमगीर केह दरबारए अहले हुनूद बज़हूर मीआयद बरां बसालत निशान वाज़ेह अस्त। चूनांचेह दर वाक़ेअह कंवर किशनसिंह अगर, चेह बमुक़तज़िए शबाब वाक़े शुदह लेकिन ईं हम असरे ता'स्सुबाते आलमगीर बूदह केह दर हर रंगे दर शाने ईं फिरक़ह बअ'मल मी आरद। बिनाबरां नज़र बर रिआयत खानहज़ादी केह कुरसी ब कुरसी अज़ीं दूदमाने वाला निसबत ब ईं ताइफ़ह मरई गश्तह नमूदह बवास्तए सरबुलन्दी व नवाज़िश ब ख़िताबे मीरज़ा राजगी व मरातिब व मनसब व इनआ'मे पिदरे ऊ ब आं मूरिदे मकरमत व मरातिबे मनसबे कंवराई आं जलादत शिआर बिशन सिंह मरहमत फ़रमूदेम। बायद केह बइनायते रोज़ अफ़ज़ूं ख़ुसरवानह उम्मीदवार बूदह मुसतइ'द व गोशबर आवाज दाश्तह बाशद व हरगाह केह रायाते नुसरत आयात ब सौबे हिन्दुस्तान नहज़त कुनद बा नुसरतमन्दां सआ'दतकेश शामिल गश्तह दर तक़दीमे कारे बादशाही सईए बलीग बकार बुरद ता बाइसे मुजरा व नताइजे नेक गरदद। जवाहर व ख़िलअत अज़ सबबे ना अमनी–ए–तुरुक़ मरसूल न गश्त।

बीस्त पन्जुम जुमादल अव्वल सन् (1093 हिजरी)

शाहज़ादा द्वारा हस्तलिखित निर्देश :–

आ उम्दए राजहाए इख़लास मसतूरीन राजा रामसिंह।

वाजिबुल इताअत दानिस्तह बहमह अलताफ़ व इ'नायते आं उम्दए शामिले हाले ख़ुद तसव्वुर नमूदह अराइज़े मुशतमिल आहवाले ख़्वेश मी फ़िरिस्तादह बाशन्द।

नवीन नं. 254 / पूर्व नं. 165

शाहज़ादा मुहम्मद अकबर का निशान राजा रामसिंह के नाम।

मुहर में अंकित नाम :— मुहम्मद अकबर सानी बिन (पुत्र) अबुल मुज़फ़्फ़र मुहिय्युद्दीन मुहम्मद औरंगज़ेब आलमगीर बादशाह ग़ाज़ी

''अल्लाह सबसे बड़ा है''

अपने समान व समकालीन व्यक्तियों में चयनित, अपने समकक्ष व सरदारों में श्रेष्ठ, साहसिक व शूरवीर, शूरवीरता व बहादुरी की क्षमता रखने वाले, शुभेच्छु आस्थावानों में उच्च, निष्कपट स्वामी भक्तों के शिरोमणि, अधिकतम कृपाओं के योग्य, राजा रामसिंह। बादशाही असीम कृपा—दृष्टि से शक्ति—सम्पन्न एवं प्रसन्नचित्त होकर अवगत हों कि आपकी सेवगी और निकपट आस्था पुराने समय से पुश्त दर पुश्त (वशांगत) हमारे पुर्वजों के साथ चली आ रही है और आपकी विशेष सत्यनिष्ठ स्वामीभक्ती आपके बाप—दादा की भांति हमारे दिल पर स्पष्ट रूप से अंकित है। इसके अतिरिक्त आलमगीर का व्यवहार जो हिन्दुओं के प्रति है वह आपको ज्ञात है। अतः कंवर किशन सिंह की घटना में जो सामने आया वह यद्यपि यौवन के फलस्वरूप था किन्तु यह भी आलमगीर के पक्षपात के कारण हुआ जैसाकि वह हर प्रकार से इन लोगों (हिन्दुओं) के साथ करता है।

अतः ख़ानाज़ादी (बाप—दादा की राजकीय सेवा) को ध्यान में रखते हुए जो परम्परागत रूप से हमारे वंशजों के प्रति है उसके निमित्त गौरवान्वित व सम्मानित करने के लिए मीरज़ा राजा का ख़िताब (उपाधि) और बापका पारितोशिक व मनसब आपको और कंवराई के मनसब के पद हमने बिशनसिंह को प्रदान किए। आपको चाहिए कि बादशाह ही सदैव उन्नतशील मेहरबानियों के उम्मीदवार रहकर आदेशों की पालना करने के लिए तत्पर व प्रतीक्षा करते रहें। और जिस समय सेना हिन्दुस्तान की तरफ कूच करे तो विजयी सेना के साथ सम्मिलित होकर बादशाह के कामों को सम्पूर्ण करने में पूरा प्रयत्न करें ताकि यह कृत्य आपकी कामयाबी और सौभग्यशालीता का कारण हो।

मार्ग के असुरक्षित होने के कारण जवाहर और ख़िलअत नहीं भेजे गए।

(दिनांक 22 मई सन् 1682 ई.)

शाहज़ादा द्वारा हस्तलिखित निर्देश :— निष्कपट राजाओं में श्रेष्ठ राजा रामसिंह!

हमारी कृपा—दृष्टि को अपने साथ जानकर अपने बारे में सूचित करते रहें।